अजायब बानी

मासिक पत्रिका

जनवरी-2021

Registrar of Newspapers for India No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–अठारहवां अंक–नौवां जनवरी–2021

नए साल का संदेश 3

सवाल–जवाब 5

उत्साह 15

अपने अंदर नम्रता पैदा करें 33

की कहां ते किस मुँह नाल आखां 35

मुद्दत होई यार 36

ऐस दिल नूं मैं किंझ समझावां जी 37

दु:ख कीहनूं दस्सां 38

दाता तेरियां रूहां 39

दर तेरे ते दस्तक दित्ती 40

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04 99 28 92 53 04
उप संपादक : **नन्दनी** सहयोग : **परमजीत सिंह, सुखराम सिंह व राजेश कुक्कड़**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 226 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

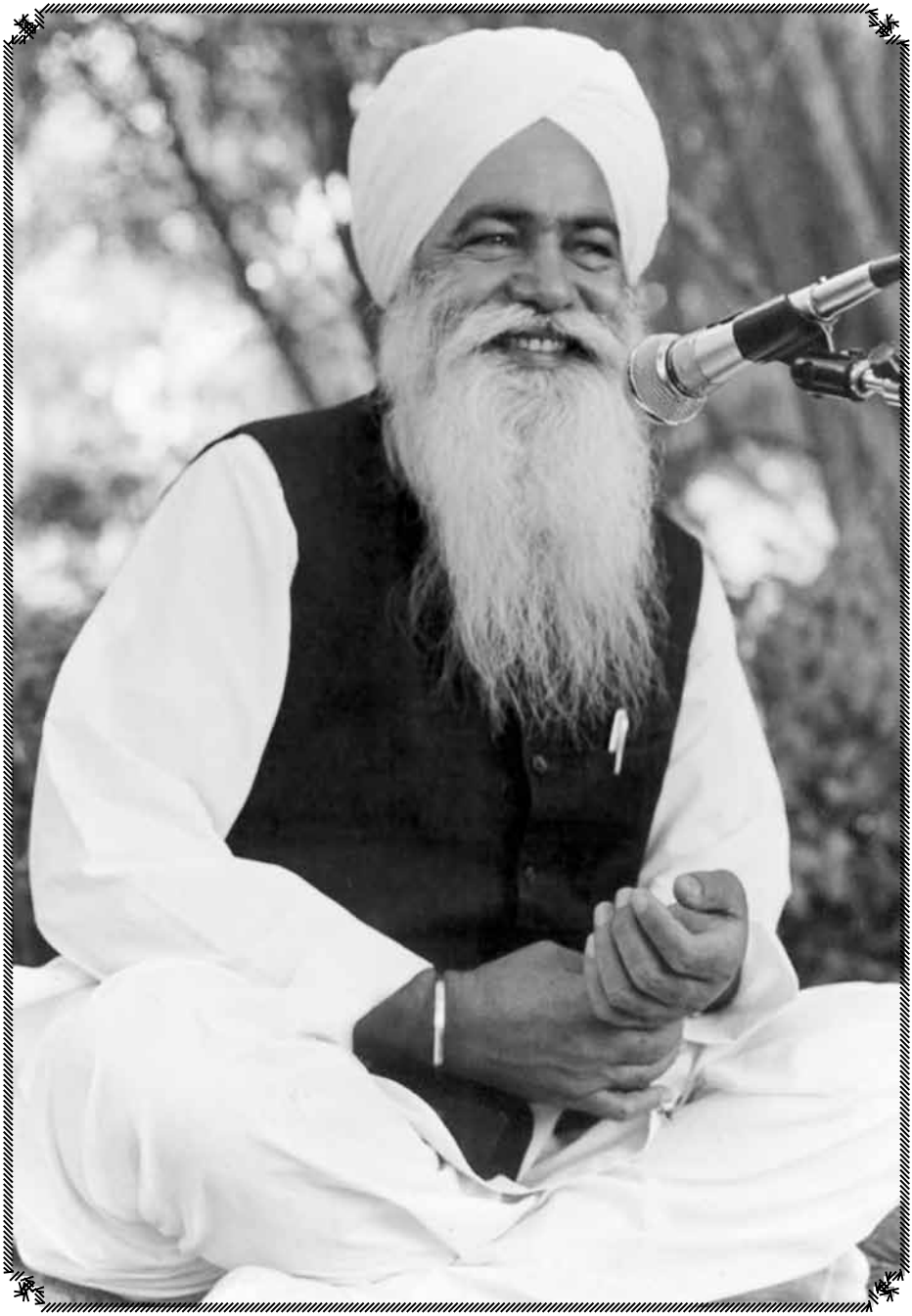

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा

नये साल का संदेश

मेरे प्यारे सतगुरु कृपाल के प्यारे भाइयों और बहनों!

मैं आपको नए साल की शुभकामनाएं दे रहा हूँ। आप सभी भाई–बहन जानते हैं कि हमारा इस दुनिया में आने का लक्ष्य क्या है।

परमात्मा ने हम पर बहुत दया की कि हमारे प्यारे सतगुरु कृपाल शारीरिक रूप में संसार में आए और आपने हमें हमारे असली घर का रास्ता दिखाया। अब हमारा फर्ज है कि हम अपने असली घर सच्चखंड पहुँचें, वहाँ तक पहुँचना कोई आसान काम नहीं है। हमें उनकी दया प्राप्त करने के लिए मेहनत करनी होगी अगर यह काम इतना आसान होता तो लाखों साधु तीर्थों पर न भटकते। फकीरों ने रात–रात भर रोकर, दर्द सहकर परमात्मा के दर्शन किए। कबीर साहब कहते हैं:

सुखिया सब संसार है खाए और सोए, दुखिया दास कबीर है जागे और रोए।।

गुरु नानक साहब ने बारह साल ईंट–पत्थरों का बिछौना किया। गुरु नानकदेव जी ने अपनी माता से कहा, ''माता! सच्चे नाम का ध्यान करना आसान नहीं है।'' गुरु अमरदास जी अपने बालों को एक किल्ली से बाँधकर रखते थे ताकि नींद न आए, सिमरन करते हुए नींद आने पर आप अपने आपको छाँटा मार लेते थे। मन को काबू में करने के लिए सिमरन के अलावा कोई और दवाई नहीं है।

अपने अंदर के पाँच डाकुओं – काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार को बस में करके लगातार सिमरन करें, सिमरन मन से लड़ने का जरिया है। आप जितना ज्यादा सिमरन करेंगे नाम के रंग में रंग जाएंगे।

सतगुरु को बाहर न समझें वह आपके अंदर है। अंदर जाएं और देखें कि सतगुरु वहाँ किस तरह काम कर रहा है। आपका लगाव नाम के साथ

होना चाहिए। अपनी रातों का सबसे अच्छा उपयोग करें अगर आप रात को नींद महसूस करते हैं तो गुरु के आगे प्रार्थना करें, ''हे सतगुरु! आपके बिना हमारा कोई नहीं है, हम अनाथ हैं।''

सतगुरु आपके साथ है, आप पूरी लगन से भजन–सिमरन करें। मेहनत के बिना दया प्राप्त नहीं होती। परमात्मा का नाम ही सच्चा खजाना है बाकी दुनिया की सब चीजें बेकार हैं। अगर आप निंदा करना चाहते हैं तो अपने दुश्मन मन की करें और अगर प्रशंसा करना चाहते हैं तो प्यारे सतगुरु कृपाल की प्रशंसा करें।

जब भी मौका मिले एकांत में रहने की कोशिश करें, एकांत में रहना भी अभ्यास का एक हिस्सा है। हमेशा सिमरन इस तरह करें कि आपको पता ही न चले कि आप हैं या सिमरन है। सिमरन एक शक्तिशाली हथियार है। तुलसी साहब कहते हैं:

तुलसी रण में जूझना घड़ी एक का काम,
नित उठ मन से जूझना बिन खंडे संग्राम।।

आपका प्यारा,

AJaib singh

दास अजायब सिंह

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियो के सवालों के जवाब

11 जनवरी 1981

सवाल–जवाब

77 आर. बी. आश्रम, राजस्थान

***एक प्रेमी**: क्या यह सच है आप आश्रम यहाँ से दूर ले जाना चाहते हैं?*

बाबा जी: हाँ! मैं महाराज कृपाल का हुक्म मानकर 16 पी.एस. गया था, मैंने वहाँ महाराज कृपाल के कहे मुताबिक काफी साल अभ्यास किया। उस जगह महाराज कृपाल ने मेरे ऊपर अंदरूनी दया की, वे मेरी आत्मा में घुल–मिल गए। मेरे अंदर उस जगह के लिए काफी लगाव है। मैं जब कृपाल के बिछोड़े में काफी उदास हो गया था तब वह जगह तब्दील करके मैं यहाँ 77 आर. बी. आ गया था। आपको पता ही है कि वहाँ आश्रम का कुछ हिस्सा बना हुआ है। रसल प्रकीन्स वह आश्रम देखकर आया है, वह जगह भजन–अभ्यास करने के लिहाज से बहुत अच्छी है।

मैं आशा करता हूँ कि जब आप लोगों को उस जगह जाने का मौका मिलेगा तो आप वहाँ भजन करके बहुत खुश होंगे। वह जगह आपको बहुत पसंद आएगी। वह जगह यहाँ से ज्यादा दूर नहीं तकरीबन बीस मील पीछे है, वह जगह यहाँ से भी बहुत ज्यादा शान्त है। उस जगह–16 पी.एस. को कुलमालिक कृपाल का बहुत आर्शीवाद है। मैं आशा करता हूँ कि आप लोग वहाँ आकर खुश होंगे और दिल लगाकर अपना अभ्यास करेंगे।

***एक प्रेमी**: क्या आप वहाँ नया आश्रम बनाएंगे या यही सामान उठाकर वहाँ ले जाएंगे?*

***बाबा जी**:* जब मैं वहाँ से यहाँ आया था तो वहाँ का कोई सामान उठाकर यहाँ नहीं लाया था। मेरे ख्याल से जब मैं वहाँ जाऊँगा तो ये सामान यहीं रहेगा मैं इसे उठाकर नहीं ले जा सकता। सतगुरु कृपाल कुलमालिक

मेरे गुरुदेव यह बात कहा करते थे, ''जब भगवान दुनिया को अन्न–पानी देने लगा तो दुनिया को अन्न–पानी देता गया लेकिन जब सन्तों की बारी आई तो भगवान ने हाथ के ऊपर रखकर नीचे इस तरह हाथ मार दिया कि वह बिखर गया और कहा कि अब आप इसे चुगें।''

कहने का भाव कि सन्त जहाँ जाएंगे वहाँ जीवों का फायदा करेंगे। अपनी–अपनी जगह सारे ही आश्रम ठीक हैं लेकिन वहाँ 16 पी.एस. में भी कुछ आत्माएं मेरा इंतजार कर रही हैं जिनके लिए मैंने वहाँ जाना है।

किसी गाँव के कुछ लोगों ने गुरु नानकदेव जी की सेवा की तो गुरु नानकदेव जी ने उन लोगों से कहा, ''तुम उजड़ जाओ।'' गुरु नानकदेव जी वहाँ से चलकर किसी और गाँव में गए तो वहाँ के लोगों ने उनको पत्थर मारे तब गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''अच्छा भाई! तुम लोग यहीं बसते रहो।'' गुरु नानकदेव जी के साथ बाला और मरदाना रह रहे थे। मरदाना ने कहा, ''सच्चे पातशाह! आपके घर में यह कैसा न्याय है कि जो लोग आपकी सेवा करते हैं उन्हें आप कहते हैं कि तुम लोग उजड़ जाओ और जिन लोगों ने आपको पत्थर मारे उनसे आपने कहा कि तुम बसते रहो?''

गुरु नानकदेव जी ने मरदाना से कहा, ''तुझे इस राज़ का पता नहीं। जिन लोगों ने सेवा की इनमें से एक–एक आदमी जहाँ जाएगा वह सबको परमात्मा की तरफ प्रेरित करेगा, सन्त–महात्माओं की सेवा में लगाएगा। एक–एक आदमी कई गाँवों का सुधार करेगा लेकिन जिन लोगों ने पत्थर मारे हैं ये लोग जिस भी इलाके में जाएंगे उस इलाके के लोगों को बिगाड़ देंगे, परमात्मा की भक्ति में नहीं लगाएंगे इसलिए ये यहीं पर ही ठीक हैं।''

राजस्थान का यह जिला डाका, चोरी और कत्ल में सबसे आगे था। जब मैं यहाँ आकर बैठा मेरे ख्यालात देखकर इस जगह के थानेदार ने मेरे पास आकर कहा, ''मेरा दिल मानता है कि अब हमें यहाँ से अपना बोरी–

बिस्तर गोल करना पड़ेगा। जो लोग आपके पास आएंगे वे शरीफ बन जाएंगे तो हमारा यहाँ क्या काम?'' वाक्य ही लक्खा–हाकम से वह पुलिस चौंकी उठा ली गई। अब लोग इस इलाके की तारीफ करते हैं। अब इस इलाके के लोगों ने चोरी करना, कत्ल करना, डाका मारना छोड़ दिया है और भले मानस शरीफ आदमी बन गए हैं।

पहले यहाँ के लोगों की आर्थिक हालत ठीक नहीं थी क्योंकि ये लोग शराब पीते, माँस खाते और लड़ाई–झगड़े करते थे। जब यहाँ के आदमी सतसंगी बने उन्होंने नाम लिया ये लोग पेट भरकर रोजी–रोटी खाने लगे और इनकी आर्थिक दशा अच्छी हो गई। हर आदमी इस बात की प्रशंसा करता है कि जब से बाबा जी यहाँ आए हमारी हालत बहुत अच्छी हो गई।

यह बार्डर का इलाका है। यहाँ पर भीड़–भाड़ इक्कट्ठी नहीं कर सकते अगर किसी का कोई रिश्तेदार आया हो तो पुलिस चौकी में खबर करनी पड़ती है लेकिन यह मेरे गुरुदेव की दया है कि यहाँ के अफसर साहिबानों ने देखा कि जो आदमी यहाँ आता है वह सुधर जाता है। आपको पता है कि यहाँ विदेशी भी आते हैं लेकिन हमें पुलिस को कोई सूचना नहीं देनी पड़ती क्योंकि वे लोग जानते हैं कि बाबा जी के पास जो भी आता है वह भजन करने के लिए आता है। मैं भी सबको यही कहता हूँ कि आप लोग अनुशासन में रहें और अपनी जमीन के अलावा किसी के खेत में भजन करने न जाएं।

आस–पास के गाँवो में हर आदमी के दिल में आश्रम के लिए कद्र है। जो लोग यहाँ आते हैं वे आपस में बहुत प्यार करते हैं और आश्रम को अपना घर समझते हैं लेकिन जब से उन्होंने यह सुना है कि बाबा जी यहाँ से 16 पी.एस. जाएंगे ये सुनकर वे लोग काफी उदास हैं। मैं उनसे यही कहता हूँ:

मोर कूंजा नू मारन ताने, त्वाडी नित परदेस तैयारी।
जां ता त्वाडा देस कवलड़ा, या ए किसे नाल यारी।

कूंजे जवाब देते हुए कहती है:

न तां साडा देश कवलड़ा, न ए किसे नाल यारी।
हर हीले चुगणी पैंदी, जेड़ी डाडे ने चोग खिलारी।

मरदाना मक्की के दाने हाथ पर रखकर खा रहा था। गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''मरदानेया! तू जो यह दाना खाने की कोशिश कर रहा है यह दाना लाहौर के एक सफेद मुर्गे ने खाना है।'' मरदाना बहुत जल्दी से दाने का फक्का मुँह में मारने लगा तो दाना उसकी नाक में चला गया। मरदाना ने बहुत कोशिश की लेकिन वह दाना बाहर नहीं निकला, मरदाना का नाक सूज गया। गुरु नानकदेव जी लाहौर की तरफ चल पड़े। जब गुरु नानकदेव जी लाहौर की तरफ जा रहे थे, आगे से सफेद रंग का मुर्गा आ रहा था। गुरु नानकदेव जी ने मरदाना से कहा, ''यह वही मुर्गा है जिसने मक्की का दाना खाना है।'' उसी समय मरदाना को छींक आई, दाना नाक में से निकलकर बाहर गिर गया, मुर्गे ने उस दाने को खा लिया। गुरु नानक साहब ने कहा:

नक नत्थ खसम हत्थ, किरत धक्के दे।
जहाँ दाना तहाँ खाना, नानका सच ऐह।।

इस इलाके के और शहर के काफी आदमियों ने मेरे पास कई तरीकों से शहर में आश्रम बनाने के लिए पेशकश की कि चाहे आप हजारों मील दूर आश्रम बना लें लेकिन आश्रम शहर के बीच में होना चाहिए। मैंने कहा कि मैं शुरु से ही गाँव में रहा हूँ और मैं एकान्त में रहकर खुश हूँ। मैं चाहता हूँ कि जो भी मेरे पास आए वह एकान्त में रहकर ज्यादा से ज्यादा भजन करे।

हम शहरों में जाते हैं थोड़ी देर अभ्यास करते हैं फिर मन सलाह दे देता है कि सिनेमा देखकर आएं फिर मन सलाह दे देता है कि चलो थोड़ी देर सैर करके आएं इस तरह हम भजन–सिमरन से दूर चले जाते हैं। आप देखें कि यहाँ मन को बाहर दौड़ने के लिए कोई जगह नहीं है, आप अपने आप ही भजन–सिमरन करेंगे।

मैं चाहता हूँ कि आप लोग मेरे पास आकर ज्यादा से ज्यादा भजन–अभ्यास करें ताकि आपको पता लगे कि एकान्त में कितना सुख, कितनी शान्ति है। मैं आर्मी में फर्स्ट क्लास का सिग्नेलर था। हिन्दुस्तान की आर्मी में यह कानून था कि जो पूना से सिग्नेलर का कोर्स कर लेता वह फर्स्ट सिग्नेलर गिना जाता था, मैंने पूना में सिग्नेलर का कोर्स किया था। आप यह न समझें कि मुझे दुनियादारी, सिनेमा वगैरह का कोई ज्ञान नहीं था, सिनेमा हमारे ख्याल को बाहरमुखी फैलाने में मदद करता है लेकिन हमारे ख्याल पहले ही बहुत ज्यादा फैले हुए हैं।

आर्मी में हमें हर हफ्ते मुफ्त सिनेमा दिखाया जाता था। मैं किसी की ड्यूटी ले लेता लेकिन सिनेमा देखने नहीं जाता। मेरे कमांडर ने मुझसे पूछा कि तुम सिनेमा देखने क्यों नहीं जाते क्या तुम्हारी दुनियादारी में रूचि नहीं? मैंने उससे कहा कि मुझे दुनिया बुरी नहीं लगती लेकिन मैं इसे अपना नहीं बना रहा, जहर मुफ्त की भी बुरी होती है। मैंने अपनी जिंदगी में कभी फिल्म नहीं देखी थी, पहली बार सन्तबानी आश्रम अमेरिका में अपनी बनी हुई फिल्म देखी थी।

मेरे कहने का भाव आपका अंतरी मार्ग नजारों से भरा हुआ है अगर आप थोड़ा सा भी अंदर जाकर देखें तो आपको पता लगेगा कि बाहर के सिनेमा से अंदर के सिनेमा का आप कोई मुकाबला नहीं कर सकते अगर आप एक बार भी अंदर जाकर देख लें तो बाहर का सिनेमा कभी नहीं देखेंगे।

मैं जब आर्मी में था तब मेरे पास 'शब्द–नाम' का भेद नहीं था लेकिन मेरा ख्याल दुनिया में ज्यादा फैला हुआ नहीं था। मैं जब भी बैठता मुझे अंतरी दृश्य नजर आते थे लेकिन मुझे यह पता नहीं था कि मैंने कहाँ जाना है, कहाँ नहीं जाना? मुझे इतना पता था:

अंदर तेरे भरया खजाना कुंजी सतगुरु कोल।

एक बार मैं ब्यास दरिया के किनारे बैठा हुआ था। वहाँ लकड़ी की बनी हुई बहुत खूबसूरत किश्तियाँ थी। लोग किश्तियों में सवार होकर उस पार पहुँच जाते थे लेकिन वहाँ पानी में ऐसी भी लकड़ियाँ थी जो कभी पानी के ऊपर तो कभी पानी के नीचे होती थी, जो उस लकड़ी पर बैठता वह अपनी जान खो देता। मेरे दिल में ख्याल आया कि यह किश्ती भी लकड़ी की बनी है लेकिन इसमें कितना फर्क है?

अंदर जाकर इस बात का पता लगा कि यह किश्ती जिस लकड़ी की बनी है इसे किसी अच्छे कारीगर ने काटकर, छीलकर इस पर रन्दा चलाकर पेचदार कील लगा दिए हैं और अब यह देखने में भी सुंदर लगती है। यह खुद भी तैरती है और जो इसकी सोहबत करता है वह भी तर जाता है, यह किसी अच्छे मिस्त्री की मेहरबानी है। दूसरी लकड़ी को कोई अच्छा कारीगर नहीं मिला इसलिए यह खुद डूब जाती है और जो इसका साथ करता है वह भी डूब जाता है।

उस समय मेरा इशारा गुरु की तरफ था कि जब तक कोई पूरा गुरु नहीं मिलता तब तक मेरी जिंदगी की किश्ती डाँवाडोल है। अभी मैं इस लकड़ी की तरह हूँ जब कोई पूरा गुरु मिलेगा तो मैं किश्ती की तरह बन जाऊँगा फिर मैं खुद भी तैरूंगा और जो कोई मेरी सोहबत करेगा वह भी तर जाएगा।

इस जिंदगी की नींव पक्की करने के लिए या इस किश्ती को बनाने के लिए मुझे पहले मिस्त्री बाबा बिशनदास जी मिले। आप बहुत सख्त मिस्त्री थे, आपने अच्छी तरह रन्दा लगाकर छिलाई की आपने कोई लिहाज नहीं किया। अगर मिस्त्री सख्त है और जब वह अच्छी तरह लकड़ी की छिलाई करता है तो बहुत तकलीफ होती है फिर मिस्त्री मिले कृपाल उन्होंने पेचदार कील लगाकर इस पर रोगन कर दिया, अब आत्मा को शान्ति है। मैं खुद भवसागर से तैरता हूँ और जो मेरी सोहबत में आता है मेरे गुरु कृपाल की दया से वह भी तर जाता है।

सतसंगी का पहला काम अपने गुरु का हुक्म मानना और गुरु पर भरोसा करना है। गुरु को कुलमालिक समझें, अपने आप से ज्यादा प्यार गुरु से करें। दिल में कभी यह ख्याल न लाएं कि गुरु इंसान है, वह इंसान नहीं होता लेकिन वह इंसानों से ऊपर होता है।

वह इंसानों में इस तरह आया होता है जिस तरह किसी के बच्चे को खानाबदोश उठाकर ले जाते हैं, उसका पिता अपने बच्चे की खोज में बाहर निकलता है और वह खानाबदोशों जैसी शक्ल बनाकर उसी किस्म के कपड़े पहनकर उनमें जाकर उन जैसी बोली बोलता है। धीरे–धीरे वह अपने लड़के को बताता है कि बेटा! तू एक बड़े घर सच्चखंड का मालिक है, वह शान्ति का देश है। जहाँ तू आया हुआ है यह तेरा देश नहीं। बच्चा अपने पिता के साथ चलना तो क्या उसकी बात सुनने के लिए भी तैयार नहीं होता।

हमें पता है कि रोज की सोहबत–संगत बड़ी जल्दी रंग लाती है आखिर रोज–रोज अपने पिता की बातें सुनकर बच्चे के अंदर हुब्बल वतनी जाग जाती है। एक दिन वह बच्चा अपने आपको अपने पिता के हवाले कर देता है और पिता से कहता है, ''तू जिसे मेरा देश कहता है वह दिखा।'' पिता तैयार ही होता है, पिता उसे उसके घर में लाकर बिठा देता है। पिता कहता है, ''देख बेटा! तू इस घर का मालिक है तू मेरा प्यारा पुत्र है, तू अंजान था समझा नहीं था।''

जब तक यह जीव बाहर बैठा है कभी गुरु पर भरोसा बाँध लेता है कभी तोड़ लेता है लेकिन जब हम अंदर के मंडलों में अपने गुरुदेव की पोजिशन देखते हैं कि कौन–कौन सी शक्तियाँ इसके आगे सिर झुका रही हैं इसका आदर कर रही हैं। सच्चा भरोसा, सच्ची विरह अंदर जाकर ही आती है।

आज तक गुरु दरबार से किसी को निराशा नहीं मिली। जो भी अपने मन का साथ छोड़कर अंदर गया गुरु चरणों तक पहुँचा गुरु दरबार तक

पहुँचा वह खुश हो गया, गुरु का ही हो गया। जब बुल्लेशाह अंदर गया तो उसने अपने गुरु और कुलमालिक को एक ही देखा तो बाहर आकर कहा:

मौला आदमी बन आया, वाह वाह अपना आप छिपाया।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सतगुरु को मानुख का रूप न जाण।
मैं वेख वेख न रज्जां गुरु सतगुरु देहा।

जब महाराज कृपाल मेरे घर आए तो मैंने आपके आगे खुश होकर यह भजन गाया था:

बन्दा बणके आया, रब बन्दा बणके आया।
आके जग जगाया, रब बन्दा बणके आया।।

हजरत बाहू ने अपने गुरु के आगे अपना प्यार इस तरह जाहिर किया:

ऐह तन मेरा चश्मा होवे मैं मुर्शिद देख न रज्जां हू।
लू लू दे मुढ लख लख चश्मा इक खोला इक कज्जा हू।
इतना डिट्ठयां सब्र न आवे मैं और कित वल भज्जा हू।
सतगुरु दा दीदार बाहू मैं लख करोड़ा हज्जा हू।।

मैंने एक भजन में लिखा है:

गद गद बानी कंठ में आँसू टपके नैन।
वो तो बिरहन कृपाल की तड़पत है दिन रैन।।

हमें भी चाहिए कि हम अपने अंदर तड़प पैदा करें, प्रेम–प्यार से अभ्यास करें, अभ्यास को बोझ न समझें। मन का कहना न मानें क्योंकि जिस मन ने आज आपको यह सलाह दी है कि शरीर बीमार है या रात बड़ी है कल अभ्यास कर लेंगे। सज्जनों! कल भी वही मन आपके पास होगा फिर कौन सा उसने कहना है कि तुम अभ्यास कर लो। कबीर साहब कहते है:

कल करन्ता अब कर, अब करता सोई ताल।
पाछे कछु न हो वई, जब सिर पर आया काल।।
सन्त की गैल न छोड़िए, मार्ग लग्गा जाए।
पेखत ही पुनित होए, भेटत जपिए नाम।।

हमें मन और सतगुरु दोनों को बराबर खड़ा कर लेना चाहिए। आप एक मिनट भी खड़े होकर सोचेंगे तो आपके मन का एक हिस्सा यह कहेगा कि भजन करें, बुराई की तरफ न जाएं। एक हिस्सा यह भी कह रहा होगा कि डरने की क्या जरूरत है बुराई कर ले कौन पूछता है? लेकिन गुरु कहता है कि साँस–साँस का लेखा लिया जाएगा तू बुराई न कर अभ्यास कर। अगर उस समय हम बुराई करने लगे तो मन के शिष्य हो गए अगर भजन–सिमरन की तरफ लग गए जिंदगी पवित्र बनाने लगे तो गुरु के शिष्य हो गए।

इस संसार से दुनिया का कोई सामान धन–दौलत, हुकूमत हमारे साथ नहीं जाएगा। हमारे साथ सतगुरु और उनका नाम ही जाएगा तो क्यों न गुरु के साथ प्यार किया जाए जिसने हमारे साथ जाना है, जिसने आगे जाकर हमारी रक्षा करनी है। हमें गुरु के साथ ज्यादा से ज्यादा प्यार करना चाहिए।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर आपसे भजन–सिमरन नहीं होता तो आप सन्तों के साथ प्यार ही बना लें क्योंकि जहाँ हमारा प्यार होगा आखिरी वक्त हम वहीं जाएंगे।''

सन्त–महात्मा प्यार लेकर आते हैं वे प्यार की मूरत होते हैं, वे प्यार ही देना जानते हैं। मैंने कई बार बताया है कि मेरे गुरुदेव ने मेरे साथ जो प्यार किया वह ब्यान नहीं किया जा सकता।

***

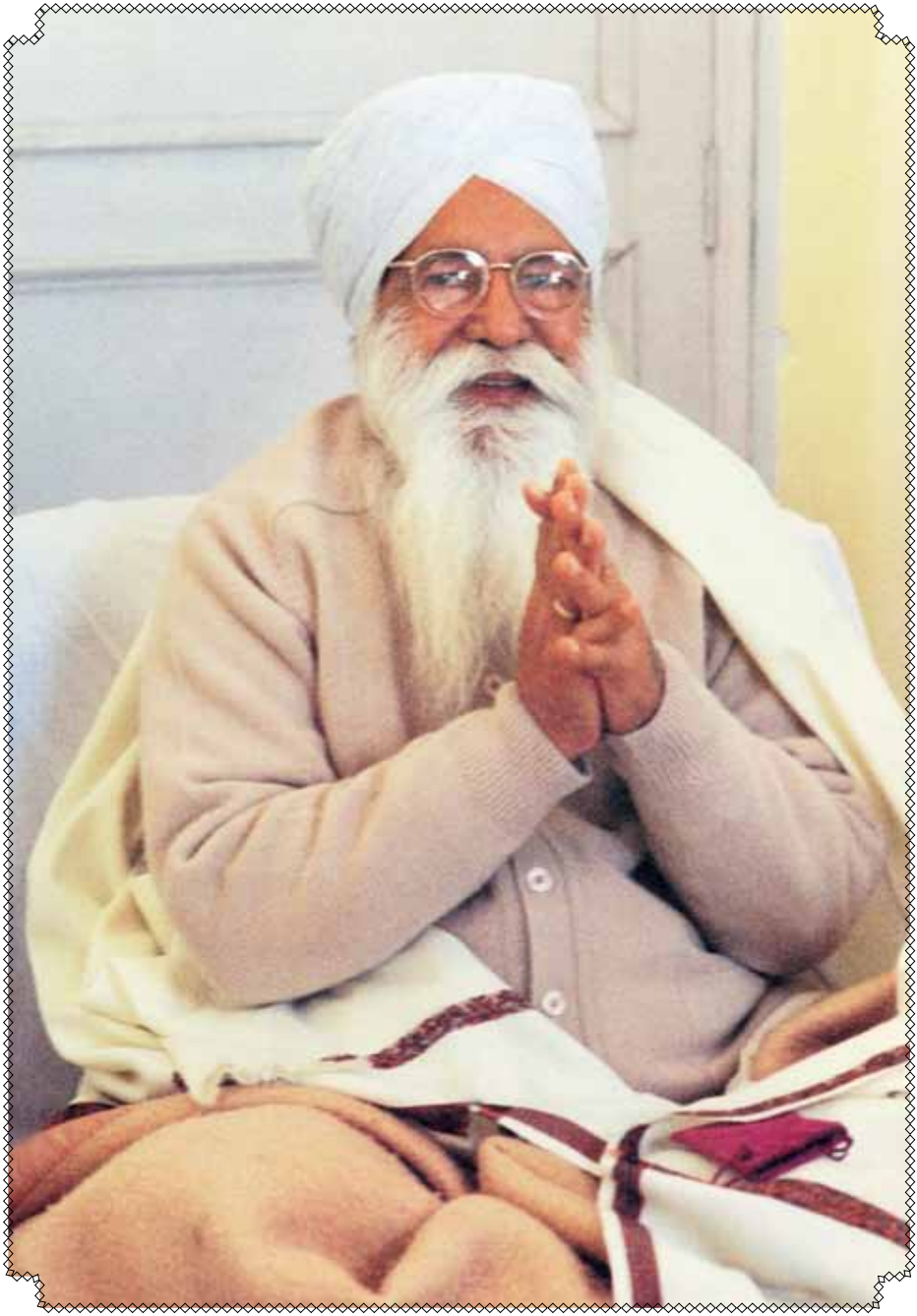

गुरु नानकदेव जी की बानी

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

उत्साह

27 जुलाई 1994 16 पी. एस. आश्रम, राजस्थान

मैं उस परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार करता हूँ जिन्होंने हमारे ऊपर बहुत अपार कृपा की है। वैसे तो परमात्मा ने हर दिन, हर महीना, तिथि और वार संसार को समझ देने के लिए बनाए हैं लेकिन हमारी जिंदगी में कोई ऐसा दिन भी आता है जिस दिन की खास महानता है। जिस तरह परंपरा सदा ही चली आ रही है कि अष्टमी तिथि को कृष्ण भगवान का जन्म हुआ। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सगली तिथि पास ते छोड़ी।

जन्माष्टमी को पवित्र मानना अच्छा है लेकिन सन्त कहते हैं कि आपके अंदर जितना **उत्साह** उस दिन के लिए है उतना ही उत्साह रोज होना चाहिए। इसी तरह हम गुरु नानकदेव जी का जन्मदिन मनाते हैं, साल में सिर्फ एक दिन के लिए ही हम अपने अंदर **उत्साह** पैदा करते हैं और बाकी के दिनों में हम उन्हें भूले रहते हैं।

महाराज सावन सिंह जी उस समय संसार में आए जब दुनिया गुरु नानकदेव जी की जगाई हुई 'शब्द–नाम' की ज्योत को भूल चुकी थी और कर्मकांड में ही फँसकर रह गई थी। जब हम यह कहते हैं कि अब कोई पैगम्बर, सन्त या गुरु नहीं होगा ऐसा करके हम आने वाले जीवों के साथ बहुत बड़ा अन्याय करते हैं। परमात्मा अपनी रहमत का दरवाजा कभी बंद नहीं करता। परमात्मा को अपने प्यारे बच्चों को जितनी जरूरत संसार में पहले भेजने की थी उतनी जरूरत अब भी है।

महाराज सावन सिंह जी सदा यही कहा करते थे कि लोकतंत्र बहुत अच्छा है हम खुला सतसंग कर सकते हैं। उस समय अंग्रेजो का राज था अगर पहले की तरह किसी एक पुरुष या किसी खास समाज का राज होता तो हम भी परखे जाते। सच का होका देने के लिए दुश्वारियाँ पैदा हुई। आपने दुनिया के कोने–कोने में कहीं पैदल चलकर, कहीं किसी सवारी का साधन इख्तियार किया। उस समय इतनी अच्छी सड़कें नहीं थी और न ही अच्छे साधन थे फिर भी आपने हर एक को बच्चों की तरह पाठ पढ़ाया।

सावन के महीने में हमारे अंदर बहुत उत्साह होता है। इस महीने में हमारे सतसंगी जिन्हें जब भी समय मिलता है वे महाराज सावन सिंह जी का जन्मदिन मनाते हैं, जन्मदिन मनाना चाहिए अच्छा है। कबीर साहब कहते हैं:

ग्यारह मास पास में छोड़े एके में रमजाना।

मुसलमान बारह महीनों में से एक महीने को ही पवित्र मानते हैं इस महीने में मुसलमान काफी साधना करते हैं अल्लाह, खुदा को याद करते हैं। कबीर साहब मुसलमान जाति में पैदा हुए, आप कहते हैं, ''प्यारेयो! क्या ग्यारह महीने किसी और ने बनाए हैं? आप खुदा के लिए सिर्फ एक महीना ही **उत्साह** पैदा करते हैं, भूख–प्यास काटते हैं।'' गुरु नानकदेव कहते हैं:

जे वेला वक्त विचारिए ते कित वेले भक्ति होई।

सन्तों को अपने जन्मदिन की कोई खुशी नहीं होती। हमारे दिल में जितना **उत्साह** सावन के महीने में होता है उतना ही उत्साह हर रोज होना चाहिए क्योंकि हर रोज ही हमारे महान गुरुओं के जन्मदिन है।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जब आत्मा शरीर में प्रवेश करती है वह दिन तो आत्मा के कैद होने का दिन होता है। सन्तों का असली जन्मदिन वह है जब वे सतगुरु के घर में जन्म ले लेते हैं उन्हें नाम मिल जाता है।''

गुरु नानकदेव जी से सिद्धों ने पूछा, ''आपका जन्म–मरण कैसे कटा, आपका गुरु कौन है?'' गुरु नानकदेव जी ने कहा:

सतगुरु के जन्में गवन मिटाया, अनहद राते ये मन लाया।

जब मेरा जन्म सतगुरु के घर में हुआ तो मेरे जन्म–मरण का चक्कर समाप्त हो गया। मैंने अपना मन दुनिया में से निकालकर 'शब्द–नाम' के साथ जोड़ लिया है। हमारा असली जन्मदिन वह है जिस दिन हमें नाम मिल जाता है और हम अपने फैले हुए ख्याल को नौं द्वारों में से निकालकर 'शब्द–नाम' के साथ जोड़ लेते हैं, हमारा जन्म सतगुरु के घर हो जाता है।

हमें अपने बुजुर्गों की याद मनानी चाहिए क्योंकि साल में एक बार हमारा भूला–भटका मन इस तरफ जुड़ता है। उत्तरी भारत में सावन का महीना बहुत खुशियों भरा गिना गया है। इस महीने में बारिश होती है, मोर नाचते हैं और बारिश के जरिए नये–नये किस्म के फूल पैदा होते हैं। अभी बारिश हुई है पेड़ों, बाग–बगीचों और फसल के ऊपर सुंदर रंग है। लोग इन्हें देखकर खुश होते हैं। काली घटाएं चढ़कर आती हैं और बिजली की चमक इसे सुहावना बनाती है। इस महीने में और भी अनेकों किस्म की खुशियाँ हैं लेकिन हमारी आत्मा में किसी खास चीज की तड़प बनी रहती है।

जिस तरह किसी औरत का अपने पति से बिछोड़ा हो जाता है लेकिन जब तक उसका अपने पति से मिलाप नहीं होता वह तड़पती है इसी तरह हमारा पति परमात्मा है, हमारी आत्मा उस परमात्मा से बिछुड़ चुकी है। जब तक वह 'शब्द–रूप' परमात्मा से नहीं मिलती इसके दिल में बहुत तड़प बनी रहती है कि कब उसके साथ मेरा मिलाप हो? जब तक आत्मा को परमात्मा नहीं मिलता यह सुहागन नहीं होती। इस महीने की खुशी में मैं आमतौर पर यह शब्द लिया करता हूँ:

मोरी रुण झुण लाइआ भैणे सावणु आइआ।।

सभी महात्मा यही कहते हैं कि आओ! आपको 'शब्द–नाम' के साथ जोड़ दें, आप ऊपर चलें। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सन्तों का यह मकसद नहीं कि वे हमें कोल्हू के बैल की तरह अभ्यास में फँसा दें कि ये सारी जिंदगी टाँगे अकड़ाते हुए निकाल दें लेकिन हम में से कितने लोग ऊपर जाने के लिए तैयार होते हैं? हम नाम जरूर ले लेते हैं, नाम लेना भी हमारे अपने बस में नहीं है। परमात्मा हमें प्रेरित करके अपने हुक्म से नाम देता है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

जिन्हां मस्तक धुरो हर लिखया तिन्हां सतगुरु मिलया।

इतनी पब्लिक में कितने लोगों को सन्त–सतगुरु मिलते हैं और कितने लोगों को नाम मिलता है। सन्त हमें बताते हैं कि सतसंग में आना क्यों जरूरी है और हम सतसंग में जो सुनते हैं उस पर अमल करना भी जरूरी है लेकिन हम मन के वश में आकर सब कुछ भूल जाते हैं। आपको अक्सर सतसंग में बनिए की कहानी सुनाई जाती है कि वह धोती झाड़कर घर चला जाता था, हमारी भी यही हालत है, सतसंग सुना लेकिन उस पर अमल नहीं किया। महाराज जी कहा करते थे, ''जो पत्थर पानी में पड़ा है वह तपिश से बचा हुआ है।'' सन्त हमें दुनियावी मिसाले देकर समझाते हैं।

बानासुर राजा की लड़की ऊखा थी। वह पढ़ने के लिए रोज पार्वती के पास जाया करती थी और शाम को वापिस आ जाती थी। राजा बानासुर बहुत शक्तिशाली राजा हुआ है, उसका कृष्ण के साथ युद्ध भी हुआ है। कृष्ण ने बानासुर को युद्ध में हराया था। एक दिन ऊखा ने शिवजी और पार्वती को दुनियादारी करते हुए देखा तो उसके दिल में भी पति का ख्याल आया, वह उदास रहने लगी। पार्वती ने उसे समझाया, ''बेटी! तू दिल लगाकर पढ़ स्वपन में तुझे तेरे होने वाले पति के दर्शन होंगे।''

बाबा सावन सिंह जी महाराज

राजा बानासुर ने अपनी बेटी को उदास देखकर उसके लिए बाग लगा दिया, उसका दिल बहलाने के लिए सखी–सहेलियाँ भी छोड़ दी। एक दिन ऊखा को स्वपन में कृष्ण के पौत्र अनिरूद्ध के दर्शन हुए जिसके साथ उसकी शादी होनी थी। उसने अपने होने वाले पति के साथ प्यार की बातें की लेकिन जब शारीरिक संबंध बनाने लगी तो उसकी आँख खुल गई, उसके पास न पति था और न सुहाग का चूड़ा था। वह अपनी सहेलियों को बताती है, ''बहनों! मुझे स्वपन में जो पति मिला था वह मेरे पास नहीं हैं और न ही मुझे उसके पते की जानकारी है। मैं उसे कहाँ संदेश भेजूँ? अगर कोई मुझे उसका संदेश लाकर दे तो मैं उसे सब कुछ देने के लिए तैयार हूँ।''

इस कहानी का इस शब्द के साथ खास संबंध है। गुरु नानकदेव जी ने इस शब्द में हमें बहुत से दुनियावी उदाहरण और ऐतिहासिक मिसालें देकर समझाया है। गौर से उनका शब्द सुनें:

मोरी रुण झुण लाइआ भैणे सावणु आइआ।।

जो सेवक नौं द्वारे खाली करके अंदर सतगुरु के स्वरूप तक नहीं पहुँचा जिसने गुरु की प्यार भरी मीठी झलक नहीं देखी उस बेचारे को बिछोड़े के दु:ख का क्या पता है कि बिछोड़ा क्या है, गुरु का नाराज होना या गुरु का प्राप्त न होना क्या है? जो एक बार अंदर जाकर गुरु के मनमोहक स्वरूप को देख लेता है अगर उस स्वरूप की झलक बंद हो जाए तो उसके ऊपर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ता है। वह न रात को सो सकता है और न दिन में उसे दुनिया अच्छी लगती है। उसकी आँखों के आगे गुरु की मनमोहनी सूरत चलती–फिरती रहती है लेकिन मिलाप नहीं होता। वह तड़पता है उसके दिल में इस तरह के बलबले उठते हैं वह सोचता है कि मुझसे कोई कसूर या कोई अवज्ञा हो गई होगी जो मेरा प्यारा गुरु मुझसे नाराज हो गया है। पहले वह मेरे नजदीक था मुझे उसके दर्शन होते थे अब वह दूर क्यों हो गया है?

महात्माओं का इतिहास पढ़ने से पता लगता है। आप इसमें बुल्लेशाह की खास मिसाल देख सकते हैं कि किस तरह बुल्लेशाह का मुर्शिद उससे थोड़ा सा ही नाराज हुआ था। महाराज सावन सिंह जी बताया करते थे कि बुल्लेशाह की बिरादरी में शादी थी वह रोज इनायत शाह से अर्ज किया करते थे कि आप हमारी बिरादरी की शादी में जरूर हाजिर हों। इनायत शाह खुद शादी में नहीं जा सके और उन्होने अपने एक सेवक को शादी में भेज दिया।

बुल्लेशाह मौहम्मद साहब की कौम सैय्यद जाति में से थे। बुल्लेशाह के गुरु इनायत शाह अैराईं कौम से खेती–बाड़ी करने वाले थे। सैय्यदों के दिल में अहंकार था कि हमारी ऊँची जाति है। इनायत शाह के सेवक के कपड़े फकीरों वाले थे कोई खास अच्छे कपड़े भी नहीं थे। बिरादरी वाले तो पहले ही बुल्लेशाह से खुश नहीं थे कि इसने सैय्यद होकर एक अैराईं जाति वाले को गुरु धारण किया है।

जब वह सेवक वापिस आया तो इनायत शाह ने उससे पूछा ''सुना भाई! तेरा क्या हाल है तूने अच्छी शादी देखी?'' उस सेवक ने बुल्लेशाह की लापरवाही का सारा हाल और समाज वालों के व्यवहार का सारा हाल बताया। इनायत शाह ने कहा, ''कोई बात नहीं तू नाराज न हो बुल्ले की यह मजाल कि उसने मेरे सेवक को अपने गुरु का रूप नहीं समझा। हम उसके खेतो की तरफ से पानी मोड़कर तेरे खेतों की तरफ कर देते हैं।''

इनायत शाह ने अपना ख्याल इस सेवक की तरफ कर दिया, सेवक तो मस्ती के रंग में रंग गया। बुल्लेशाह के ऊपर मुसीबत आ गई क्योंकि उसे पहले जो रोजाना दर्शन होते थे अब वह दर्शन होने बंद हो गए। बुल्लेशाह दिन–रात तड़पता है आखिर बुल्लेशाह इनायत शाह के डेरे पर गया। इनायत शाह ने बुल्लेशाह से कहा, ''तू मेरे सामने मत आ, डेरे से बाहर हो जा।''

आप जानते हैं कि जब सेवक को मुर्शिद यह कह देता है तो सेवक के पल्ले क्या रह जाता है? क्योंकि जिन्हें अंदर झलक नहीं मिली होती उनका रास्ता और होता है लेकिन जिन्हें झलक मिल जाती है उनका ख्याल और होता है इसलिए बुल्ला दिन–रात तड़पता है।

इनायत शाह को राग सुनने का बहुत शौक था। वहाँ हर साल उर्स लगता था, इनायत शाह कव्वालियाँ सुनने के लिए वहाँ जाया करते थे। आखिर बुल्लेशाह ने डांस करने वालों के साथ मिलकर अच्छा डांस करना सीख लिया और बुल्लेशाह ने उर्स पर जाकर खूब डांस किया। हमें पता ही है कि कव्वालियाँ गाने वाले जल्दी थक जाते हैं क्योंकि उनका मसला दुनिया को रिझाना ही होता है लेकिन बुल्लेशाह ने दुनिया को नहीं अपने गुरु इनायत शाह को खुश करना था।

सब नाच गाना करके थक गए लेकिन बुल्लेशाह इतना मस्ती में नाचता रहा कि वह रूका नहीं। आखिर बुल्लेशाह ने बहुत दर्दभरी, प्यार भरी, गुरु की बेपरवाही की और अपनी गुस्ताखियों की काफियाँ बोली कि आप मुझे माफ कर दें, मैं लेखा करके छूट नहीं सकता। इनायत शाह ने पूछा, ''तू बुल्ला है?'' बुल्लेशाह ने कहा, ''नहीं जी! मैं भूला हुआ हूँ।'' इनायत शाह ने बुल्लेशाह को गले से लगाया और उसकी कमर पर हाथ फेरा, बस! इतना कहने की देर थी कि बुल्लेशाह की खेती को रूहानियत का पानी लगना शुरु हो गया। आप बुल्लेशाह की काफियाँ पढ़कर देख सकते हैं जिनमे इस दर्द का खास जिक्र है कि किस तरह मुर्शिद के साथ बिछोड़ा हुआ और किस तरह उस पर दु:खों के पहाड़ टूटे।

इस शब्द में गुरु नानक साहब बताते हैं कि हमारी पाँच कर्म इन्द्रियाँ और पाँच ज्ञानेन्द्रियां हैं, ये इन्द्रियाँ खट्टे–मीठे स्वादों की तरफ लगी हुई हैं। जब हम सिमरन के जरिए अपने ख्याल को तीसरे तिल पर एकाग्र कर लेते हैं तो

यही इन्द्रियाँ अंदर शब्द परायण हो जाती हैं। पहले ये बाहर के खट्टे–मीठे रस नहीं छोड़ती थी अब ये शब्द के रस में मस्त हो जाती हैं।

सावन के महीने में मोरों को आनन्द होता है, वनस्पति को आनन्द होता है, किसानों को खुशी होती है कि आज बारिश हुई है। इसी तरह आत्मा को आनन्द होता है। महात्मा ने एक–एक महीने को मनुष्य जन्म के साथ तसवीह देकर बताया है। मैं बताया करता हूँ:

जाँकी होय भावना जैसी हरि मूरत देखी तिन तैसी।

तेरे मुंध कटारे जेवडा तिनि लोभी लोभ लोभाइआ।।

पहली बार जब मुझे परमात्मा कृपाल का दर्शन हुआ, मैं उस समय के बारे में बताया करता हूँ कि आपका मनमोहना स्वरूप था, आपकी आँखे कमान की तरह थी आपकी आँखों ने मुझे रस्सी की तरह बाँध लिया।

यह प्रीत शिष्य नहीं लगा सकता शिष्य में यह ताकत नहीं कि गुरु को ढूंढ ले। महाराज जी कहा करते थे, ''अंधे की क्या ताकत है कि वह सुजाखे को पकड़ ले?'' बुल्लेशाह ने भी कहा, ''पहले तूने खुद प्रीत लगाई अब तू छिपकर बैठा है।'' यह उनका कहना है जिन्होंने अपना तन, मन और धन सब कुछ गुरु के ऊपर न्यौछावर कर दिया है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

रीसा करे तनाड़ियां जो साहिब दर खड़ियां।

हम भजन–अभ्यास नहीं करते लेकिन कमाई करने वाले सेवकों की नकल जरूर कर लेते हैं अगर नकल के साथ करनी भी हो तो कितना आनन्द, कितना प्यार आएगा। इसलिए आत्मा प्यार से गुरु के आगे उसकी तारीफ करती है कि तेरी प्यार वाली निगाह की रस्सी ने मुझे अपने प्यार में बाँध लिया है, अब मैं छूट नहीं सकती।

तेरे दरसन बिटहु खंनीऐ वंञा तेरे नाम विटहु कुरबाणो।।

महाराज सावन सिंह जी जब सतसंग करते थे उस समय बहुत से लोगों की कोशिश होती कि हम आगे होकर बैठें। महाराज सावन का यह हुक्म था कि जो पहले आता है वह आगे बैठे जो बाद में आता है वह पीछे बैठे। महाराज कृपाल कहा करते थे कि मैं सदा ही पीछे बैठकर सतसंग सुना करता था। एक दिन आपके एक मित्र को पता लगा कि महाराज सावन सिंह जी की निगाह कहाँ पड़ रही है, वह मित्र महाराज कृपाल के पास बैठकर कहने लगा कि सारी तवज्जो आपके ऊपर आ रही है। महाराज सावन सिंह जी सतसंग में अक्सर कहा करते थे, ''जट्ट की नजर क्यारे के पिछली तरफ होती है कि पिछला सिरा सूखा न रह जाए।''

आप प्यार से कहते हैं, ''तेरी तीखी नजरे कटार वाली हैं उन्होंने मुझे बाँध लिया है। अब आत्मा कहती है कि मैं तेरे उस समय के दर्शन पर कुरबान जाती हूँ, तेरे शब्दों पर कुरबान जाती हूँ कि तू किस तरह प्यार के शब्द सुनाता है। मैं तेरे दर्शनों के लिए चार टुकड़े होने को भी तैयार हूँ कि तूने मुझे वह प्यार भरा दर्शन दिया है जिन दर्शनों के लिए देवी–देवता भी लोचते हैं।'' उन दर्शनों के बारे में स्वामी जी महाराज कहते हैं:

मेरे गुरु का कोई स्वरूप देखे हो जाए हूर परंदरी।

ढाबां का एक मौलवी मेरा दोस्त था, उसने महाराज कृपाल के साथ बातचीत की। मैंने उससे पूछा, ''सुना भाई! तेरा क्या हाल है क्या तू महाराज की तरफ देख सका?'' उसे उस राज़ का ज्ञान नहीं था, उसने कहा कि इंसान की तरफ देखना क्या मुश्किल है? मैं हँस पड़ा। वह काफी दूर से चलकर मेरे पास आता था। पहले हम सबके साथ ऐसा ही होता है कि हम अपने अंदर कई शक पैदा कर लेते हैं अगर कर्मों में लिखा हो तो हम शक–शकूक करते हुए भी उस जगह को नहीं छोड़ते।

आखिर जब उस मौलवी को नाम मिला, उस दिन उसे पता लगा तो उसने मुझसे कहा, ''आज आप मुझसे वह सवाल पूछें जो आपने पहले पूछा था क्या तू महाराज कृपाल की आँखों में देख सका? मुझे अब पता लगा कि उनकी आँखों में क्या है?'' फूल की कद्र भँवरे को होती है।

अब आत्मा प्यार से कहती है कि मैं तेरे दर्शन पर कुरबान जाती हूँ बलिहार जाती हूँ, तूने मुझे 'शब्द–नाम' दिया है। उस नाम ने सारी दुनिया की रचना पैदा की है वह कण–कण में व्यापक है।

जा तू ता मै माणु कीआ है तुधु बिनु केहा मेरा माणो।।

मैंने बताया था कि जिसे अंदर वह झलक मिल जाती है अगर वह झलक बंद हो जाए तो उसका यह हाल है। आत्मा कहती है कि तूने मुझे दर्शन दिया तभी मैंने मान किया। हो सकता है कि मेरा मान ही दीवार बनकर खड़ा हो गया हो, अब जब तू नहीं तो मेरा कैसा मान है? मैं तेरे बिना एक कौड़ी की भी नहीं। मैं कहा करता हूँ:

किसी काम का थे नहीं कोई न कौडी दे।
कृपाल सिंह सतगुरु मिलया भई अमोलक देह।।

भक्त नामदेव जी ने अपनी बानी में लिखा है:

आठ दाम को छीपरो होयो लोकहीणा।

इस छीम्बे को कोई आधी कौड़ी भी देने के लिए तैयार नहीं था। बड़े–बड़े पंडित, गुणी–ज्ञानी, राजा–महाराजा आपके दर पर आकर झुकने लगे क्योंकि आपने 'शब्द–नाम' की कमाई की। कबीर साहब कहते हैं:

बनना तुनना त्याग के प्रीत चरन कबीरा।
नीच गुणा जुलाहरा पयो गुणी गहीरा।।

कबीर साहब नीची जाति में आए लेकिन बड़े–बड़े राजा–महाराजाओं ने आपको गुरु धारण किया, इसमें जाति की नहीं नाम की कमाई की बड़ाई है।

चूड़ा भंनु पलंघ सिउ मुंधे सणु बाही सणु बाहा।।
एते वेस करेदीए मुंधे सहु रातो अवराहा।।

गुरु नानकदेव जी प्यार से कहते हैं कि जप–तप और पूजा–पाठ किया फिर भी परमात्मा अंदर प्रकट नहीं हुआ। जिस तरह बाहर के हार–श्रृंगार कर्मकांड, जप–तप, पूजा–पाठ का कौड़ी मूल्य नहीं पड़ता, वह किसी भी लेखे में नहीं। इसी तरह अगर हार–श्रृंगार लगाकर भी स्त्री को पति नहीं मिलता तो उसने बाँहों में जो चूड़ा पहना है उस चूड़े को तोड़ देना चाहिए और जो पलंग सजाया है उसे भी तोड़ देना चाहिए। आप कहते हैं:

क्रिया भ्रम बनाई सेजा सुंदर ठाठ बनाया।
संग न पाया कबहू भरते पेख पेख दुख पाया।।

हम ये सुंदर सेज परमात्मा के आने के लिए, दिल की सफाई के लिए बनाते हैं अगर इतना कुछ करते हुए भी परमात्मा नहीं मिलता तो यह कितना दुःख का कारण बनता है।

ना मनीआरु न चूड़ीआ ना से वंगुड़ीआहा।।
जो सह कंठि न लगीआ जलनु सि बाहड़ीआहा।।

जिनके कहने पर जप–तप और पूजा–पाठ किए अगली दुनिया में न वे मनिआर हैं न चूड़ियाँ हैं, ये सब किस लेखे में गया? आप कहते हैं:

लख नेकियाँ चंगियाईयाँ लख पुणां परवाण।
लख तक ऊपर तीर्था सहजो ऊगवे बाण।
लख सूरतन संग्राम रण में छूटे प्राण।।

आप कहते हैं कि चाहे इंसान लाखों नेकियाँ कर ले बल्कि अहंकार पैदा होता है कि मेरे जितना नेक कौन है? मैं शराब नहीं पीता, मीट नहीं खाता, इतना दान करता हूँ। अपने अंदर से हौमें को निकालना था लेकिन और अहंकार पैदा कर लिया। चाहे इंसान लाखों तीर्थ कर ले लेकिन आत्मा

की मैल नहीं उतरती। यह सारा दिन मैं–मैं करता है कि मैंने अड़सठ तीर्थ कर लिए हैं। मैल उतारने की बजाय और मैल लग जाती है। बेशक कोई बड़ा सूरमा बनकर युद्ध के मैदान में प्राण भी क्यों न त्याग दे, वह भी परमात्मा के दरबार में परवान नहीं। लेखे में आने वाली एक ही चीज है अगर गुरु मिल जाए, नाम मिल जाए और हम नाम की कमाई करके नाम रूप हो जाएं।

सभि सहीआ सहु रावणि गईआ हउ दाधी कै दरि जावा।।
अंमाली हउ खरी सुचजी तै सह एकि न भावा।।

अब अपनी सखियों को बताती हैं, ''हे बहनें! मैंने तो अपने आपको दुनिया में बहुत सुच्जी समझा था कि मेरे जैसी तो कोई अच्छी है ही नहीं। मैंने इतने जप–तप किए हैं पुण्य–दान किए हैं लेकिन वह सुच्ज भी मेरे काम नहीं आया। अब मैं परमात्मा के दरवाजे पर जाऊँ तो कैसे जाऊँ?''

माठि गुंदाई पटीआ भरीऐ माग संधूरे।।

अब वह सखी पूछती है, ''बहनें! तूने उस पति परमात्मा को खुश करने के लिए क्या किया?'' हमें पता है कि लड़कियाँ सिर के बालों में चीर लगाकर उसमें सिंदूर लगाती हैं जिसे माँग कहा जाता है। इतना कुछ करने पर भी परमात्मा नहीं मिलता तो दिल को दुःख होता है। गुरु नानकदेव जी का इशारा कर्मकांड करने वाले दुनियादारों की तरफ है।

अगै गई न मंनीआ मरउ विसूरि विसूरे।।
मै रोवंदी सभु जगु रुना रुंनड़े वणहु पंखेरु।।

पहले तो मेरे दिल में ख्याल था कि मैंने बहुत नेक कर्म किए हैं मुझे वह परमात्मा मिलेगा लेकिन परमात्मा के दर्शन नहीं हुए तो मेरे दिल में दुःख है। मैं रोती हूँ मेरे लिए तो सारा संसार ही रो रहा है क्योंकि मेरा गुरु परमात्मा के साथ जो बिछोड़ा था वह दूर नहीं हुआ।

इकु न रुना मेरे तन का बिरहा जिनि हउ पिरहु विछोड़ी।।
सुपनै आइआ भी गइआ मैं जलु भरिआ रोइ।।

मैंनें ऊपर शब्द शुरु करने से पहले बताया था कि जिसे उस स्वरूप की हल्की सी झलक मिल जाती है अगर वह झलक बंद हो जाए तो उसके लिए जिंदगी, मौत का सवाल खड़ा हो जाता है। उन्हें न दिन में चैन है न रात को नींद आती है। प्रेमी आत्मा उस थोड़े से दर्शन को याद करके रोती है क्या फिर मुझे कभी अपने गुरु के मीठे प्यारे दर्शन होंगे?

आइ न सका तुझ कनि पिआरे भेजि न सका कोइ।।

सन्त–सतगुरु धरती पर तो सिर्फ नाम देने और सतसंग सुनाने के लिए ही आते हैं लेकिन सेवक की यह ताकत नहीं कि वह उनके असली देश पहुँच जाए, गुरु उसे दया करके ही ले जा सकते हैं। अब आत्मा कहती है कि मैं खुद तेरे पास आ नहीं सकती और तेरे पास किसी को भेज भी नहीं सकती कि कोई आकर तुझे मेरा दर्द बताए कि मैं कितनी तड़प रही हूँ।

आउ सभागी नीदड़ीए मतु सहु देखा सोइ।।

सिमरन के जरिए नौं द्वारे खाली करके आँखों के पीछे आना वह नींद है जब आत्मा आँखों के पीछे आकर सहस्त्रदल कमल पर पहुँच जाती है, तब मन और आत्मा की गाँठ खुल जाती है इसे समाधि में जाना कहते हैं। मैं जब समाधि में जाऊँ तब वह मुझे दर्शन दे फिर मेरी आत्मा की प्यास बुझे।

तै साहिब की बात जि आखै कहु नानक किआ दीजै।।

वह जिस सहेली के आगे दुःख रो रही है वह पहुँची हुई आत्मा है। वह उसे अपना दुख बताती है कि बहने! पहले तो मुझे अंदर गुरु के दर्शन होते थे अब वह दर्शन होने बंद हो गए हैं। क्या मुझसे कोई गलती हो गई है? मैं वहाँ किसी को भेज नहीं सकती और खुद वहाँ जा नहीं सकती। वह सखी

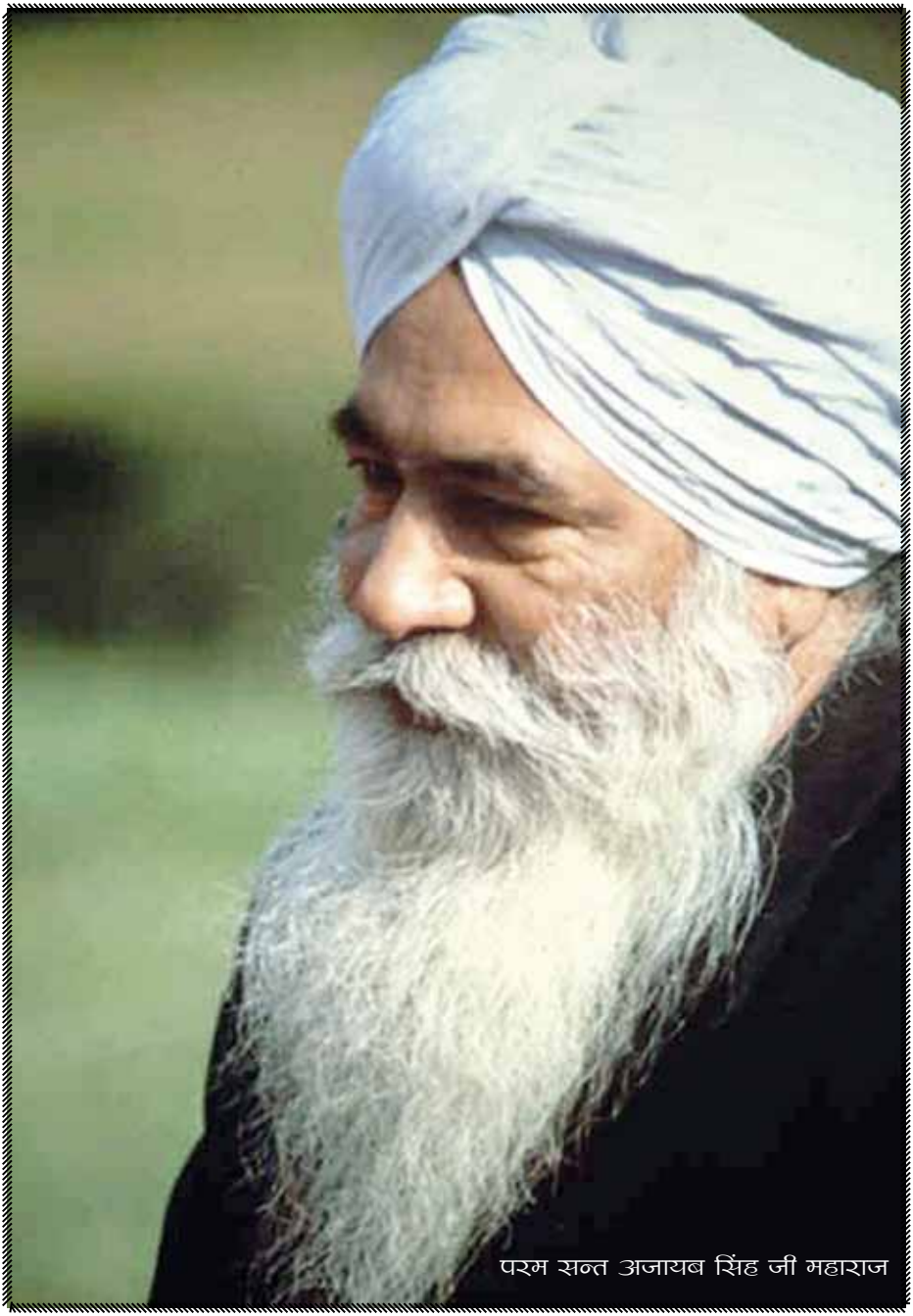

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

पूछती है, ''बहने! अगर कोई आकर तुझे उसकी बात बताए, उसका संदेश दे तू उसे क्या देगी उसे किस तरह खुश करेगी?'' कबीर साहब कहते हैं:

एदरो सब कोई जात है भार लदाए लदाए।
ओदरो सतगुरु आत है जाते पूछो धाए।।

दुनिया यहाँ से कर्मों का बोझ उठा–उठाकर चली जाती है लेकिन वहाँ से कोई नहीं आता जो आकर हमें अपना हाल बताए। वहाँ से सिर्फ सन्त सतगुरु ही आते हैं जो हमें उस देश का हाल बताते हैं कि वहाँ बिछोड़े का दर्द नहीं, वह प्यारों का देश है मिलाप का देश है। वहाँ दुनिया की तरह दिन–रात नहीं, वेद–कतेबों के झगड़े नहीं; मजहबी रूकावटें नहीं वहाँ शान्ति और प्यार है। सिर्फ महरम ही वहाँ जाकर उस देश को समझ सकता है।

बाबा बिशनदास जी गिरी महात्मा के बारे में बताया करते थे कि वह चले जा रहे थे किसी ने उन्हें पकोड़े वगैरह भेंट किए। सतगुरु ने वह पकोड़े खा लिए और शिष्यों ने भी वह पकोड़े खा लिए। जब पकोड़े खाने लगे तो शिष्यों ने कहा इसमें मच्छी का माँस है। महात्मा ने कहा, ''हमने मालिक को भोग लगा दिया है तुम खा लो।'' शिष्यों को आजादी हो गई कि अब हम खूब माँस–मच्छी खाया करेंगे शराब वगैरह पिया करेंगे। एक शिष्य ने वह पकोड़े नहीं खाए थे कि जो गुरु करता है वह हम न करें। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

गुरु की करनी काहे धावो।

सेवक तभी गिरता है जब वह गुरु की नकल करता है। एक दिन महात्मा ने सेवकों से कहा, ''मैंने तुमसे कहा था कि तुमने मीट–शराब के नजदीक बिल्कुल नहीं जाना तुम ये सब क्यों खाते हो?'' सेवको ने कहा, ''आपने क्यों खाया?'' गुरु ने कहा कोई बात नहीं। एक दिन आप चले जा रहे थे कारखाने में सिक्का ढाल रहे थे, महात्मा ने शिष्यों से कहा, ''आओ! इस सिक्के को पिओ।'' शिष्यों ने कहा, ''आप भी पिएं।'' महात्मा ने वह सिक्का कप में डाला और मौज से पी लिया।

समरथ को नहीं दोष गोसाईं, गुरु की करनी काहे धावो।

शिष्यों में कहाँ हिम्मत थी कि वे सिक्का पी जाते। जिस शिष्य ने मीट वाले पकोड़े नहीं खाए थे गुरु ने उसे अपनी गद्दी दी। गुरु नानकदेव जी के कहने का मतलब यह है कि गुरु का कहना मानें उसकी नकल न करें।

रीसा करे तनाड़ियां जो साहेब दर खड़ियाँ।

अगर कोई आकर आपको परमात्मा की बात बताए तो आप उसे क्या देंगे? उसके ऊपर क्या न्यौछावर करेंगे? क्योंकि उस परमात्मा की बात वही बताएगा जो उसके पास से आया है। अंधा अगर हाथी देख लेता है तो क्या वह हाथी का कद, दाँत या रंग बता सकता है? आँखों वाला हाथी देखकर उसका कद, रंग सब कुछ ही बताएगा।

इसी तरह जो वहाँ से आया है वही उस परमात्मा की सिफत और परमात्मा का घर बताएगा। नामदान के वक्त वहाँ का प्रकाश बताएगा वह सिर्फ बताता ही नहीं बल्कि उस प्रकाश के साथ जोड़ता है, वह आवाज बताएगा और उस आवाज के साथ जोड़ेगा।

सीसु वढे करि बैसणु दीजै विणु सिर सेव करीजै।।
किउ न मरीजै जीअड़ा न दीजै जा सहु भइआ विडाणा।।

क्यों न हम उसके ऊपर अपना शीश न्यौछावर कर दें जिसने आकर मुझे अपना संदेश दिया, परमात्मा की आवाज के साथ जोड़ा। पराया हुआ पति परमात्मा अब मेरा बन गया है, उसने मुझे अपने गले से लगा लिया है। फैले ख्याल को नौं द्वारों में से निकालकर ऊपर लाना है क्योंकि अहंकार नीचे रह जाता है। अहंकार पर काबू पाना है। अहंकार ही हमारे और गुरु के बीच दीवार बनकर खड़ा है। अहंकार हमें गुरु का हुक्म नहीं मानने देता हमने इस मन को बस में करना है।

जिस तरह आज हम परमात्मा सावन की याद में बैठे हैं, उन्होंने संसार में आकर हमें अपने घर का संदेश दिया और उस आवाज के साथ जोड़ा। आपने दया करके अपने प्यारे पुत्र परमात्मा कृपाल को संदेश देने के लिए संसार में भेजा कि मेरी तालीम गुम न हो जाए। सन्त न हमारे तन के भूखे हैं न मन और धन के भूखे हैं लेकिन जब तक सेवक इस शरीर को गुरु का समझकर इस्तेमाल नहीं करता तब तक वह कामयाब नहीं होता।

हमने अहंकार को बस में करना है, जब अहंकार बस में आ जाता है तब हमारी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दे उतर जाते हैं। हम मन और माया से ऊपर चले जाते हैं; ब्रह्म, पारब्रह्म से भी ऊपर चले जाते हैं तब जाकर अहंकार हमारा पीछा छोड़ता है। बड़े–बड़े ऋषि–मुनियों को अहंकार ने अपना दास बना लिया है।

अहंकारया सो मारया।

हम तीर्थों पर जाकर कहते हैं कि हमने इतना कुछ किया है। दान–पुण्य करते हैं तब भी अहंकार हमारे अंदर बैठा हैं। यह रास्ता सब कुछ करके भी दम मारने का नहीं, अंदर ही हजम करने का रास्ता है। महाराज सावन सिंह जी अक्सर कहा करते थे:

किया कराया सब गया जब आया अहंकार।

जिस तरह परमात्मा सावन और कृपाल ने हमें खुले दिल से नामदान दिया है, हम उनका यश गाएं और अपने जीवन को सफल बनाएं। हम दिल में इस महीने के लिए जितना **उत्साह** रखते हैं कि इस महीने में हमारे प्यारे गुरु आए हैं हमें साल भर इसी तरह उत्साह बनाकर रखना चाहिए। इसका नाम प्यार नहीं कि दो दिन आया दो दिन गया, प्यार तो नित्य नया होता है।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से.....

अपने अंदर नम्रता पैदा करें

08 मई 1985 कैलिफोर्निया

इतने सारे नए भजन लिखने का कारण यह है कि आप इन भजनों द्वारा समझ सकें कि गुरु क्या है? जो शिष्य अंदर जाता है, गुरु को अपने अंदर प्रकट कर लेता है वह गुरु से बहुत कुछ पा चुका होता है। वह शिष्य महसूस करता है कि वह गुनाहगार है; वह हमेशा अपने आपको पापी और अपने गुरु को अपना आदर्श समझता है।

जिस भाषा में भजन लिखे गए हैं वह भाषा आपके लिए पढ़नी मुश्किल है। जब आप प्रेम–प्यार से भजन बोलने का अभ्यास करेंगे तो आपको लगेगा कि आप अच्छी तरह भजन गा रहे हैं। मैंने अपनी जिंदगी में ज्यादा से ज्यादा कर्मकांड और रीति–रिवाज किए हैं लेकिन मैंने अपने भजनों में इनके बारे में कोई जिक्र नहीं किया। मैंने भजनों में वह कहने की कोशिश की है जो मैंने खुद अनुभव किया है। आप जब सतसंग करते हैं या कोई दुनियावी काम

करते हैं उस समय आपको जो भजन अच्छा लगता है आप उस भजन की एक–दो लाईनें याद रखें जिससे आपको अभ्यास करने में मदद मिलेगी। मैंने अपने एक भजन में बोला है:

छुटेंगा जम जाली तों, जद भजन गुरां दे गावेंगा।

आप गुरु के भजन गाएंगे तो यम के फंदे से मुक्त हो जाएंगे अगर आप किसी से प्यार करते हैं तो उसके शब्द आपके होठों पर खुद–ब–खुद आ जाएंगे। अगर आप गुरु और गुरु के भजनों को याद करते हैं तो आपके अंदर गुरु के लिए प्यार पैदा होगा।

असली नम्रता अंदर जाने के बाद ही आती है। आपका मन आपको धोखा दे रहा है। मैं अक्सर कहा करता हूँ अगर संसार में हमारा कोई दुश्मन है तो वह हमारा मन ही है। परमात्मा ने दया करके हमें मनुष्य का जामा दिया है और हमें सन्तों की संगत दी है।

गुरु ने कृपा करके हमें नाम की बख्शिश दी है। अब हम गुरु की गोद में बैठकर परमार्थ में तरक्की कर रहे हैं। परमार्थ की प्रगति में मन ही बाधक है। हम आसानी से दूसरी बाधाओं को दूर कर सकते हैं लेकिन हमारे और गुरु के बीच मन ही बाधा है। हम जब तक इस बाधा को नहीं हटाते तब तक हम परमार्थ में तरक्की नहीं कर सकते।

मैंने सदा यही कहा है कि सिमरन की ताकत मन की ताकत से कम नहीं। **शिष्य को चाहिए कि वह सदा गुरु का आसरा और गुरु की ताकत लेते हुए काम करे। शिष्य को कभी यह नहीं सोचना चाहिए कि उसका गुरु उससे दूर है, गुरु शिष्य को कभी नहीं छोड़ता।** जब तक हम मन इन्द्रियों के सुखों में फँसें हुए है तब गुरु पर्दे के पीछे बैठ जाता है लेकिन जब हम मन इन्द्रियों से लगाव छोड़ देते हैं तो गुरु पर्दा हटा देता है, ठीक उसी तरह जैसे हम शीशे में अपना चेहरा देखते हैं। ***

की कहां ते किस मुँह नाल आखां

की कहां ते किस मुंह नाल आखां
बक्श दे सतगुरु अैब मेरे x 2
की कहां ते किस.....

1 किथों शुरू करां की आखां, समझ ना आवे मैनूं जी,
बेहिसाब ने अवगुण मेरे, किंझ सुणावां तैनूं जी x 2
कैंदया दाता लजया आवे x 2 किंझ आख सुणावां तैनूं जी,
की कहां ते किस.....

2 भुलया हां मैं जीव निमाणा, चढ़ गया मन दे हत्थां विच,
भुलया तेरा सिमरन दाता, पै गया मंदड़े कम्मां विच x 2
तकां हुण किस मुंह नाल दाता x 2 तेरियां सोहणियां अखां विच,
की कहां ते किस.....

3 हर इक अैब मेरे विच दाता, लम्बी लिस्ट गुनाहां दी,
फोलीं नां कोई वरका इस चों, हथ जोड़ कुरलावां जी x 2
कज्ज लवीं तूं परदा दाता x 2 जिवें अज तक कज्जया जी,
की कहां ते किस.....

4 पाड़दे वरके दाता मेरे, कीते खोटेयां कर्मां दे,
दया बणी रहे बस दाता, मेरे जेहे बेशर्मां ते x 2
बक्श दे बक्शणहार कहावें x 2 कोई नमक ना छिड़के जख्मां ते,
की कहां ते किस.....

5 अजायब सतगुरु दाता तूं हैं, तूं ही लाज रखावेंगा,
अैबां भरे 'गुरमेल' पापी नूं, तूं ही चरणी लावेंगा x 2
चरणी डिगयां पापीयां नूं दाता x 2 तूं ही पार लगावेंगा,
की कहां ते किस.....

मुद्दत होई यार विछड़ेयां पा फेरा

मुद्दत होई यार विछड़ेयां पा फेरा,
रूल गए विच संसार विछड़ेयां पा फेरा,

1 होई कोंण खुनामी, जो तूं मुड़ेया इ ना x 2
तरले ओसियां पाए, तूं ते सुणेया इ ना,
आजा आजा आजा x 2 मुड़ेया पा फेरा,
मुद्दत होई यार .....

2 लंघदे ने दिन साडे, तरले पोंदेयां दे x 2
साह जे दाता चलदे, साडे जिओं देयां दे,
करे यतन बहुत मैं दाता x 2 बझदा ना ज़ेरा,
मुद्दत होई यार .....

3 मन वी दागी, तन वी दागी हो गया है x 2
समझ नी ओंदी दाता, की की हो गया है,
बणके आजा वैद्य x 2 जे धरजां मैं ज़ेरा,
मुद्दत होई यार .....

4 हिम्मता टुटियां हौंसले टुटे, तन वी मेरा थक गया x 2
सुण सुण गल्लां ताने फिकरे, मन वी मेरा अक्क गया,
दिसदा ना कोई चारे पासे x 2 पै गया जिवें है नेरा,
मुद्दत होई यार .....

5 रब सी मेरा रब है मेरा, सब कुछ तूं ही है मेरा x 2
देख ना अवगुण अजायब जी, मैं तेरा बस मैं तेरा,
'गुरमेल' दे कोले आके x 2, बैह जा इक वेरां
मुद्दत होई यार .....

ऐस दिल नूं मैं किंझ समझावां जी

ऐस दिल नूं मैं किंझ समझावां जी
उम्रां तां लंघ चलियां दाता जी उम्रां तां लंघ चलियां.....

1 दु:ख विछोड़े दा बहुत सतोंदा वे x 2
सोहणेया दर्श बिना चैन नहीं औंदा वे x 2
बह जा सामणें तूं इक वारी आके जी उम्रां तां लंघ चलियां.....

2 दर्द विछोड़ा अज किने साल होए वे x 2
जांणदा ऐं तेरे बाजों किना अस्सी रोए वे x 2
हुण हिम्मतां ने तेरे बाजों हारियां जी उम्रां तां लंघ चलियां.....

3 तेरे ही विछोड़े वाली अग्ग मैं तां सेकदी x 2
बैठ तेरे दर उत्ते तेरा ही राह देखदी x 2
कीते वादेयां नूं आप निभा जा जी उम्रां तां लंघ चलियां.....

4 मसां मसां जिंदड़ी तें प्यार विच रंगी वे x 2
जापदा है जन्मा तों तेरे नाल मंगी वे x 2
बण सजण तू डोली मेरी चा जी उम्रां तां लंघ चलियां.....

5 समझ यतीम दाता तूं ही गल लाया सी x 2
प्यार वाला बीज दाता आप तूं लगाया सी x 2
दर्श तेरे बिना रूह मुरझावे जी उम्रां तां लंघ चलियां.....

6 प्यार दा पुजारी दाता अजायब जी सदावे तूं x 2
सागर प्यार दा कृपाल जिनूं गावें तूं x 2
ओसे प्यार नूं 'गुरमेल' कुरलावे जी उम्रां तां लंघ चलियां.....

दुःख कीनूं दस्सां

दुःख कीनूं दस्सां, वे मैं दुःख कीनूं दस्सां
दुःख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता मेरेया
दुःख कीनूं दस्सां, वे मैं दुःख कीनूं दस्सां

1 भरया प्याला पापां गमां नाल दातेया
सुणदा नी कोई तेरे बाजों दुःख दातेया x 2
करां अरजोई x 2 तेरे ताई मेरे दातेया
दुःख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता.....

2 जीव हां निमाणा, कोई शहंशाह तां हां नहीं
छोटी जेही औकात मेरी, समझदा वी हां नहीं x 2
छड दित्ता जित्थे x 2 ऐह फानी संसार आ
दुःख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता.....

3 संसार विच दाता, जदों तूं विसारेया
दुःखां दे खजाने भरे, मेरे कोल दातेया x 2
झाक इक वारी x 2 मेरे वल मेरे दातेया
दुःख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता.....

4 खुशी सुख हासा, मौज मस्ती की हुंदे ने,
मंदभागे जीव, काल नगरी च रोंदे ने x 2
जख्मी है दिल x 2 तन रोगां ने है खा लया
दुःख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता.....

5 सुण लै पुकार, अजायब कृपाल दे दुलारेया,
ओही हां मैं जीव, जिनूं 'गुरमेल' सी पुकारेया x 2
रख लै तूं रख x 2 पत्त मेरी ओ दातारेया
दुःख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता.....

दाता तेरियां रूहां तेरे दर आ गईयां

दाता तेरियां रूहा तेरे दर आ गईयां x 2
बख्श देयो मेहर करके दु:खड़े असी सह रहियां
दाता तेरियां रूहां तेरे दर आ गईयां x 2

1 आजा कोले बैठ असाडे दिल दियां गल्लां करिए
दु:ख–सुख दर्द सुनेहे सजणा तेरे कोले कहिऐ x 2
बात नी साडी पुछदा कोई, तेरे दर हुण आ गईया
दाता तेरियां रूहां तेरे दर आ गईयां x 2

2 वक्त गवाया गल्ली बाती गफलत दे विच आके
पाप कमाए बहुते सारे मन दे कहणे आके x 2
बहुत हो गया काल पसारा, तेरे चरणी पे गईयां
दाता तेरियां रूहां तेरे दर आ गईयां x 2

3 दु:ख वी है ते गिला वी दाता तेरे विछोड़े ताईं
आ ईक वारी गल नाल ला ले छड्ड न मुड़ तूं जाईं x 2
रो लए सारी उम्र बथेरा, वापस घर नूं आ गईयां
दाता तेरियां रूहां तेरे दर आ गईयां x 2

4 कहे अजायब सुण कृपाल प्यारे तेरे वारे जाईऐ
तक्क ले साडे वल्ल प्यारे पार उतारे पाईऐ x 2
बख्श दे दाता अवगुण साडे, सी माड़े कर्मीं पे गईयां
दाता तेरियां रूहां तेरे दर आ गईयां x 2

दर तेरे ते दस्तक दित्ती दरवाजा ते खोल

दर तेरे ते दस्तक दित्ती दरवाजा ते खोल
जी आयां जे आख नी सकदा अलविदा ही बोल x 2

1 तू ही मेरी झोली दे विच खैर प्यार दी पाई
प्यार दी तेरी ईक बूँद मेरी सगली होंद रोशनाई, x 2
आप ही हुण इस रोशन रूह नूं x 2 पैरां हेठ न रोल
जी आयां जे आख नी सकदा अलविदा ही बोल x 2

2 तन वी तेरा देणदार है रूह वी है करजाई,
तन हुण मेरा रोगां खादा रूह वी फिरे घबराई x 2
हुण इस मन दे झखड़ा अग्गे x 2 रह न सकां अडोल
जी आयां जे आख नी सकदा अलविदा ही बोल x 2

3 अजे वी चेते दे तल उत्ते तेरा ही परछावां
की होया जे बदल गया है तेरा वे सिरनावां x 2
किद्दर जावां किद्दर लब्बां x 2 फिरदी हां अनभोल
जी आयां जे आख नी सकदा अलविदा ही बोल x 2

4 अजे वी ख्वाबां दे विच जगदे याद तेरी दे दीवे,
साह तेरे दी धड़कन अजे वी हिक मेरी विच जीवे x 2
राह तक तक मैं ओसियां पावां x 2 काग बुलावा कोल,
जी आयां जे आख नी सकदा अलविदा ही बोल x 2

5 'अजायब' मन दी मिट्टी उत्ते उकरे रोसे हासे
कन्ना दे विच अजे वी गूंजण कृपाल दे बोल पतासे x 2
मैं सुहागण तेरा राह वे तकदी x 2 हुण आ दरवाजा खोल
जी आयां जे आख नी सकदा अलविदा ही बोल
दर तेरे ते दस्तक दित्ती दरवाजा ते खोल
जी आयां जे आख नी सकदा अलविदा ही बोल

शिष्य को चाहिए कि वह सदा गुरु का आसरा और गुरु की ताकत लेते हुए काम करे। शिष्य को कभी यह नहीं सोचना चाहिए कि उसका गुरु उससे दूर है, गुरु शिष्य को कभी नहीं छोड़ता।